हुसैन अ० कौन थे?

मौलाना रज़िउद्दीन हैदर साहब क़िब्ला, संस्थापकः यादगारे हुसैनी कालेज इलाहाबाद

प्यारे मित्रों! तुम भारतवर्ष में अपने मुसलमान भाइयों को देखते होगे कि यह लोग प्रतिवर्ष मुहर्रम के मास में किसी शहीद का धार्मिक बलिदान भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाते हैं। घरों में मजलिसें स्थापित (संयोजित) करके उनका स्मरण करके रोते हैं और सड़कों पर जुलूस निकालकर रंज और ग़म को प्रकट करते हैं। तुम जानते हो कि वह कौन थे? वह अरब देश के धार्मिक मार्ग प्रदर्शक मुहम्मद साहब की पवित्र पुत्री के दुलारे और अली[अ०] की आँखों के तारे थे जो तीन हिजरी में मदीने में पैदा हुए। यह नाम तुम्हारे लिये अपरिचित नहीं किन्तु तुम इस नाम को सैकड़ों बार तथा हज़ारों बार सुन चुके होगे। परन्तु भाइयों मेरा विचार है कि शायद तुमको इनके ठीक-ठीक वृत्तान्त और उनके जीवन के ठीक-ठीक हालात के सुनने और सुनकर उस पर ध्यान देने का अवसर बहुत कम मिला होगा। इतना तो तुम अवश्य जानते होगे कि यह किसी बड़े ऐतिहासिक और धार्मिक घटनाओं के वीर (Hero) हैं। मगर तुम इस घटना की विशेषता और उनकी प्रतिष्ठा से अवश्य अपरिचित होगे। अतएव मेरी प्रार्थना है कि आओ और थोड़ी सहन शक्ति के द्वारा इनके पवित्र चरित्र और आचरण के जानने में कुछ समय व्यतीत कर दें, और देखो कि हुसैन[अ०] ने पवित्र इच्छा के लिए तन, मन, कुटुम्ब अर्थात किसी वस्तु को शुभ कार्य प्रिय नहीं समझा। सत्यता के लिए बड़ी सी बड़ी भेंट भी इन्होंने बड़े साहस और बहादुरी से अर्पण कर दी।

हुसैन[अ०] के बलिदान के सम्बन्ध में हिन्दुओं की रायें

महात्मा गाँधी की राय

मैंने कर्बला की घटना के विषय में उस समय पढ़ा जब कि मैं जवान था। और उस घटना ने मुझको मुग्ध कर दिया।

(‘सरफ़राज़’ लखनऊ मुहर्रम नम्बर 1934)

हिज़ एक्सलेन्सी राजा राजयान सर किशुन प्रसाद, महाराजा बहादुर यमीनुस्सलतनत, के.सी. आई.ई., जी.सी.आई.ई. पेशकार व सदर आज़म बाब हुकूमत सरकार आली, हैदराबाद

इस घटना से जो अभिप्राय हुसैन[अ०] का था उसके प्रकट करने के लिए आवश्यक था कि इस घटना की यादगार स्थापित की जाती। वास्तव में ऐसा ही हुआ। संसार के विद्वानों ने इस घटना को प्रचलित रखने के लिए भिन्न-भिन्न नियमों से रंज प्रकट किया इन घटनाओं को हर साल बयान करना आरम्भ किया, केवल इस अभिप्राय से कि संसार में इनका प्रचार हो जिनको दुखी हुसैनअ० ने अपनी घटना को कठिन से कठिन श्रेणी तक पहुँचा कर संसार वालों के सामने पूर्ण पाठ के भेष में अर्पण किया था। हुसैन[अ०] की मृत्यु एक ऐसी बड़ी घटना है कि जैसी न कभी कहीं हुई और न स्वयं इस्लामी इतिहास उसकी समता कर सका। प्राचीन धर्मों और उनके इतिहासों को यदि इसी प्रकार मान लिया जाए जिस प्रकार हमारे सामने इस समय उपस्थित हैं, तब भी उनके सामने शहीदों का क्रम कठिनाई से हमारे शहीद की प्रतिष्ठा (व भल मनसाहत) की तुलना कर सकेगा।

‘सरफ़राज़’, लखनऊ मुहर्रम नम्बर 1931

मिस्टर आनन्द म्याघर एम.ए.बी.एल. प्रचीन एडिटर, इनचार्ज (सरवेन्ट); (इंगलिश बसबन्ती):-

हुसैन और उनके साथी एक-एक करके धर्म की वेदी पर बलिदान हो गये। उन्होंने तलवारें खाईं, लेकिन

शिकवा व शिकायत का शब्द भी मुँह पर न लाए। वह घायल होकर बजाए दुखी होने के प्रसन्न होते थे और ईश्वर को धन्यवाद देते थे।

संसार आज तक शहीदे कर्बला की बहादुरी हिम्मत, वीरता, दृढ़ता और संतोष को नहीं भूला है। जो नमूना आप ने उत्तम बलिदान करके कर्बला के मैदान में दिखलाया, वह आज तक सैकड़ों वर्ष व्यतीत होने पर भी हमारा पथ-प्रदर्शक बन रहा है।

'सरफ़राज़' लखनऊ मुहर्रम नम्बर 1931

मिस्टर मोतीलाल राव (सभापति) अमाहत बाज़ार एसोसीएशन व चटागांग नरसिंह होम।

शहीद लोग सदैव जीवित रहते हैं और उनके शिक्षा सम्बन्धी कर्तव्य और कार्यों के चिन्ह बिना जाति झुण्ड, दृढ़ के अतिरिक्त हर मनुष्य के हृदय में सदैव लिखे रहते हैं। उनके पंचभौतिक शरीर के मिट जाने के पीछे भी यह न सोचना चाहिए कि संसार उनके उपकार से पृथक हो गया बल्कि वह सदैव अज्ञानकारी नियमों से धर्म और धर्मियों की सहायता करते रहते हैं और पथ-प्रदर्शक होकर उनको सीधे पथ पर चलाते हैं, ताकि मनुष्य को बैकुन्ठ के द्वारे तक पहुँचने में सुविधा हो।

'सरफ़राज़' लखनऊ मुहर्रम नम्बर 1931

पंडित बृजनाथ साहब शरग़ा, बी.ए.एल.बी.

एडवोकेट, लखनऊ

हर धर्म का उत्तम नियम बलिदान है। इसमें संदेह नहीं कि प्रकृति का उत्तम नियम यही है कि जब खेत में गेहूँ का बीज अपने को मिटा देता है तब उससे बहुत सी बालियाँ उत्पन्न होती हैं। इस सिद्धान्त का प्रत्यक्ष उदाहरण हर धर्म में मिलता है। हज़रत ईसा ने सलीब (Cross) पर जान इसलिए दी कि मनुष्य जाति का भला हो। हज़रत दधीच ने अपनी हड्डियाँ इसलिए खुशी से दे दीं कि नेकी की शक्तियाँ बदी के बल पर जागृत हों।

हुसैन ने अपना और अपने कुटुम्ब का बलिदान इसलिए किया कि सत्यता के पथ पर मनुष्य प्राण देना सीखे। जिस समय सांसारिक शक्तियाँ इस्लाम के सन्मुख लड़ाई को खड़ी थीं और भय, भूति और लालच उसकी पूरी सहायता करते थे, हुसैन ने बिना भय के सत्यता का झण्डा ऊँचा किया। जो धर्म के नशे में चूर थे। उसे यदि भय था तो केवल ईश्वर का, यदि लालच है तो केवल उसके मिलने की। संसार उसे क्या डरा सकता था। और किस वस्तु का लालच उसे डिगा सकता है। क्या अच्छा होता कि हमारे हिन्दी भाई हिन्दु और मुसलमान राजकुमार प्रह्लाद और हज़रत इमाम हुसैन के जीवन चरित्रों से यह शिक्षा ग्रहण कर लेते कि सत्यता पर प्राण देना (प्राण लेना नहीं) सदैव जीवित रहना है। तो हमारे देश का इतिहास किसी और ढंग पर लिखा जाता।

'सरफ़राज़' लखनऊ मुहर्रम नम्बर 1934

पंडित मनोहर लाल तिवारी बी.ए.एल.एल.बी.

एडवोकेट, वाईस चेयरमैन म्युनिस्पिल बोर्ड, लखनऊ

ऐतिहासिक दृष्टि से भी हुसैन की एक बड़ी हस्ती हो गई है और उनका गुण एक उन्नति के अन्त तक पहुँच गया है। यही कारण है कि उनकी यादगार इस समय तक जीवित है और सदैव स्थापित रहेगी। हुसैन का विजय पाना, ईश्वर के ऊपर भरोसा करना, सच्चाई को न छोड़ना, नेक और सच्चे नियमों पर बलिदान होना, कठिनाई का बहादुरी से सामना करना, अन्याय के सम्मुख कठिन से कठिन दुख सहते हुए सर न झुकाना, उनके ऐसे सिद्धान्त थे कि जिनको प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन की कसौटी बनाना चाहिए। ऐसे गुणों के होते हुए भी जो जो दुख उन्होंने और उनके कुटुम्ब तथा परिवार वालों ने उठाये हैं, उनका हाल सुनकर ज़रूर मनुष्य को रोना आता है। इस से मैं यही एक फल निकालता हूँ कि ईश्वर अपने नेक दासों की परीक्षा बहुत कठिनता से लेता है और यदि सब कठिनाइयाँ झेलकर भी वह सत्यता के पथ दृढ़ पर रहता है तो वही फिर ईश्वर से मिलने के योग्य होता है। ऐसी ज़ात हुसैन की थी।

'सरफ़राज़' लखनऊ मुहर्रम नम्बर 1934

A.C.M.

कर्बला के ख़ूनी मैदान में हुसैन की शहादत जुमे (शुक्रवार) के दिन 10वीं मुहर्रम 61हिजरी को हुई जो सन् 680ई॰ के अनुसार है। प्रतिवर्ष मुहर्रम के इन 10

दिनों में इस घटना की यादगार सब मुसलमान भारत और फ़ारस में एक ऐसे जोश के साथ मनाते हैं जिसकी मिसाल दुनिया के किसी और धार्मिक यादगार में नहीं मिलती है।

'लीडर' इलाहाबाद
26 अप्रैल सन् 1931ई०

हुसैन क्यों शहीद हुए

साठ हिजरी में जब अमीर मुआविया का देहान्त हो गया, तो उनका पुत्र यज़ीद गद्दी पर बैठा जिसे खेलकूद का व्यसन और सैर व शिकार की बान बचपन ही से थी। राज्य मिलते ही वह अपनी इसी लत में स्वतंत्रता के साथ लग गया। शराब और कबाब से उसकी सभा गर्म रहती, सुन्दर स्त्रियाँ और नौयुवक सेवक उसके आनन्द भवन की शोभा बढ़ाते थे। वह निर्दोष मनुष्यों को मृत्यु दण्ड देकर प्रसन्न होता था और पवित्र मनुष्यों के रक्त से होली खेलता था। द्रव्य के घमण्ड में चाटुकारियों को अपना सेवन बनाये चैन से जीवन व्यतीत कर रहा था। उसका आतंक सब लोगों के दिलों पर ऐसा छा गया था कि किसी को उसके प्रति कुछ बुरा करने का साहस न होता था। जब राजा का यह हाल था तो फिर प्रजा के सदाचार धार्मिक (राजनैतिक) मुल्की हाल का क्या पूछना है? प्रत्यक्ष रूप में पाप किया जा रहा था। शराब पीना और व्यभिचार अपराध न समझे जाते थे। असत्यता का वायुमण्डल देश में चारो ओर चल रहा था। यह एक अज्ञानता थी जो चारो ओर फैल रही थी।

हुसैनअ० इन आन्दोलन को देख रहे थे और मन ही मन में मनुष्य के कलंकित होने और सदाचार के मिटने पर आँसू बहा रहे थे। यज़ीद स्वयं भी जानता था कि सारा अरब देश शाही चौखट पर सर झुकाये हुए है, मगर हुसैन की दृष्टि उस पर घृणा से पड़ती है। इस विचार के पैदा होते ही उसने यह चाहा कि जिस प्रकार भी हो सके राज्य का दबाव डालकर हुसैनअ० से भी आधीनता स्वीकृत करा लेना चाहिए और उन्हें अपना सेवक बना लेना चाहिए। चुनानंचे वलीद जो मदीने का गर्वनर था, उसे एक पत्र लिखा कि वह हुसैन से मेरी आधीनता स्वीकृत करा ले। यदि वह इनकार करें तो सर काट कर यज़ीद के पास भेज दे। वलीद ने हुसैन को बुलाकर यज़ीद के पत्र को पढ़कर सुनाया, आधीनता स्वीकृत का प्रश्न हुसैनअ० के सम्मुख मरने जीने के प्रश्न के सहित पेश था। हुसैन ने समझ लिया कि यही मौक़ा है जब मृत्यु को जीवन पर उत्तेजना दी जाती है। भलमनसाहत और मनुष्यत्व, ही क्या? सच्चाई के लिए राज्य और उसकी शक्तियों को ठोकर लगा दी जाती है। यद्यपि हुसैन जैसे विद्वान, ज्ञानी, और संयमी मनुष्य के लिए एक ऐसे बुरे आचरण वाले मनुष्य की आधीनता स्वीकृत कर लेना कठिन था। हुसैन आज़ाद गोद का पला था, वह देश छोड़ सकता था, घर-बार लुटा सकता था, जान दे सकता था, मगर मनुष्यत्व और सदाचार की निन्दा उसके सहन शक्ति के बाहर थी। सर झुकाना उसकी प्राकृति में था केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर के सामने। इस अवसर को जान-बूझकर कर्तव्य पालन करना हुसैन ही ऐसे मनुष्य का काम था। कृष्ण महाराज का उपदेश भी जो उन्होंने कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को दिया इसको सिद्ध करता हैः-

स्वधर्मपिच उच्छिमाना विकम्पितु मह ऋषिः।
धर्मपाधी युद्ध सेत्रेयुवन्न यत्र त्त्दचिःयस्य नविघते।।

हुसैन के लिए यह सम्भव था कि वह यज़ीद की आधीनता स्वीकृत कर लेते और इस प्रकार अपने और अपने बाल बच्चों के प्राण बचा सकते थे, मगर उनकी दृष्टि इस ओर न थी। यदि आधीनता स्वीकार कर लेते तो फिर सत्यता और झूठ, अच्छाई और बुराई में क्या अन्तर रह जाता। इसलिए बिना किसी भय को हृदय में लाये हुए, आधीनता से साफ़ इनकार कर दिया। मगर इसके पश्चात मदीना भी अब हुसैन के लिए सुख-निवास न रह गया। यह आवश्यक था कि एक न एक दिन हुसैनअ० मृत्यु के मुँह में जाते और संसार को मालूम भी न होता। इसलिए हसैुन के सम्मुख केवल एक अभिप्राय था और यह कि वह अपनी शहादत में एक ऐसा असर पैदा कर ले जो हमेशा के लिए यादगार रह जाए और संसार को जब सत्यता और झूठ का निर्णय देखना हो

तो उनकी घटना पर एक दृष्टि में सब कुछ देख लें।

मदीने से कूच

हुसैन[अ०] ने अपने प्यारे देश को छोड़ दिया। जहाँ पैदा हुए और बढ़े, उसे छोड़ते समय जो कष्ट हर एक मनुष्य के हृदय को होना चाहिए वह हुसैन[अ०] को भी था, मगर वह अपने अभिप्राय को हासिल करने के लिए सब कुछ बलिदान करने को तैयार थे। वह मनुष्यत्व के लिए प्राण तक देने को तैयार थे। इसलिए उन्होंने कुछ परवाह न की। अपने सारे कुटुम्ब को लेकर मक्के की ओर चल खड़े हुए। मक्के जाना इसलिए न था कि सेना इकटठी करें बल्कि वही समय हज का था जिस अवसर पर चारों ओर से मुसलमान हज के लिए इकटठे होते हैं। हुसैन[अ०] यह चाहते थे कि आधीनता से उनका साफ़ इनकार कर देना और एक पापी के सम्मुख स्वीकार न करना और हर प्रकार की कठिनाइयों को सहने के लिए तैयार हो जाना, यह बात हर छोटे और बड़े के कान में पड़ जाए, ताकि उनकी शहादत के बाद मार डालने के कारण के समझने में किसी को सन्देह न हो। उसी समय में जब हुसैन[अ०] मक्का में थे और उससे पहले भी कूफ़ा वाले हुसैन[अ०] को अपनी ओर बुला रहे थे, इसलिए कई हज़ार पत्र उनके पास इस बात के आए कि आप हमारी ओर आइये, हम आपकी मदद करेंगे। हुसैन ने दूरदर्शिता से सोचकर पहले अपने चचेरे भाई मुस्लिम को उनकी ओर भेजा ताकि वह वहाँ की दशा से सूचित करें। मुस्लिम के वहाँ पहुँचते ही कई हज़ार आदमियों ने हुसैन[अ०] के लिये आधीनता की। जब यज़ीद को मालूम हुआ कि कूफ़ा वाले उसके जाल से निकल कर हुसैन का साथ देने को तैयार हो रहे हैं तो शीघ्र उसेन गर्वनर कूफ़ा को जो एक निर्बल मनुष्य था, उतार करके उसके स्थान पर इब्ने ज़ियाद को गर्वनर नियत किया। उसने आते ही कठिन से कठिन हुक्म जारी किया, लोगों को क़ैद करना शुरु किया और जायदाद भी अधिकार में कर ली। इस घटना ने ऐसा प्रभाव डाला कि लोग घबरा गए और जानमाल के भय से मुस्लिम को अकेला छोड़ दिया, यहाँ तक कि मुस्लिम हुकूमत के हाथों कड़ी निर्दयता से साथ मार डाले गए। जिस समय कूफ़ा में ये सब हो रहा था और हुसैन[अ०] रास्ते में थे, एक मंज़िल पर मुस्लिम के मारे जाने की ख़बर सुनी। इस हाल के सुनते ही हुसैन[अ०] ने समझ लिया कि अब परीक्षा आरम्भ हो गई।

थोड़ी देर के पश्चात इब्ने ज़ियाद के एक लश्कर ने भी हुसैन[अ०] के क़ाफ़िले को घेर लिया जो केवल इसी बात के लिए भेजा गया था कि जाकर हुसैन[अ०] को मजबूर करके ऐसे उजाड़ स्थान पर पहुँचा दे कि जहाँ उनका काम तमाम कर दिया जाए।

दस दिन में क्या हो गया?

मुहर्रम की दूसरी तारीख़ थी, जब हुसैन और उनके थोड़े से जान बलिदान करने वाले साथी कर्बला पहुँचकर शत्रुओं की अनगिनत सेना में घिर गए। पहले तो हुसैन[अ०] ने स्त्रियों और बच्चों के विचार से अपने डेरे नहरे फ़ुरात के किनारे गाड़ दिये, मगर बैरियों की सेना ने आते ही इन डेरों को उखड़वा दिया तब हुसैन[अ०] को जलती हुई रेत में अपने डेरे लगवाने पड़े। सेनाएँ प्रतिदिन आया करती थीं। यहाँ तक कि मुहर्रम की दस तारीख़ को मौत का बाज़ार गर्म था। कम से कम तीस हज़ार फ़ौज इनके विरुद्ध थी और हुसैन की ओर केवल 72 मनुष्य थे जिसमें बूढ़े जवान और बच्चे सब सम्मिलित थे। सातवीं मुहर्रम से हुसैन और हुसैन के साथियों का पानी बन्द कर दिया गया। 10वीं मुहर्रम को तीन दिन की भूख व प्यास में यह युद्ध जिस घमासान से आरम्भ हुआ और जिस बहादुरी और निर्भयता से इन भूखे और प्यासों ने सैकड़ों का सामना किया उसका नमूना संसार में कठिनाई से मिलेगा। इतिहास पुकार रहा है कि हुसैन[अ०] की सेना का हर एक मरने वाला बीसों बल्कि सैकड़ों को मार कर मरता था। यह युद्ध प्रातःकाल से आरम्भ होकर निकटतम चार बजे शाम तक होता रहा। पहले तो मित्रों में से एक-एक रण-क्षेत्र में जाकर सैकड़ों का सामना करके बैरियों को काटकर अन्त में स्वयं शहीद हो गए। उसके पश्चात कुटुम्ब की बारी आई, भाई, भतीजे, भाँजे, बेटे सभी अपने प्राणों को अर्पण करने लगे जिनमें बहुधा युवक और बालक थे। हुसैन[अ०] का भतीजा 'क़ासिम' इतना छोटा था कि

हुसैन[अ०] ने स्वयं अपने हाथों से घोड़े पर बिठाया और एक छोटी सी तलवार 'क़ासिम' के हाथ में देकर मरने के लिए भेज दिया। बत्तीस वर्ष का भाई वीर 'अब्बास' भी बहादुरी दिखाकर नहर के किनारे शहीद हो गया। 18 साल की कमाई 'अली अकबर' सीने पर बर्छी खाकर सत्यता की भेंट चढ़ गए। अस्र (शाम) तक हुसैन अपनी कुल पूँजी लुटा चुके। सब साथी और भाई-बन्द गर्दनें कटाए जलती हुई रेत पर मृत्यु की निद्रा से सो रहे थे। हुसैन[अ०] ने अपने अकेले होने का ध्यान करके सहायता के लिए एक आवाज़ लगाई। जिसके पीछे ही हुसैन को अपने डेरों से बीबियों के रोने और पीटने की आवाज़ सुनाई पड़ी। डेरे की ओर रवाना हुए यहाँ आकर अजब हालत देखी। उनका छः महीने का एक छोटा बच्चा 'अली असग़र' जिसकी माता का दूध भी सूख गया था वह भी सारे कुटुम्ब परिवार वालों के साथ भूखा व प्यासा झूले में पड़ा दम तोड़ रहा था। पिता ने पुत्र की हालत देखी और दिल भर आया। गोद में उठा लिया और सेना के सम्मुख लाकर सबको उसकी हालत दिखाई और उसके लिए एक बूँद पानी माँगा। इसी दृश्य को देखकर सारी सेना में हलचल पड़ गई और हर एक रोने लगा, मगर एक कठोर हृदय मनुष्य ने जिसका नाम ''हुर्मुला'' था ऐसा तीर ताक कर मारा जो ठीक 'अली असग़र' के गले पर लगा और यह बच्चा तड़प कर बाप के हाथों पर मर गया। हुसैन[अ०] ने उसके गले का रक्त चुल्लू में लेकर अपने मुँह में मल लिया और कहा कि इस प्रकार ईश्वर के सम्मुख जाऊँगा। हुसैन[अ०] जब यह बलिदान भी कर चुके तो स्वयं मरने के लिए तैयार होकर रणक्षेत्र में जाने लगे। मगर बेचारी स्त्रियों ने चारो ओर से आकर उन्हें घेर लिया। उनकी बहन और बेटियाँ किसी प्रकार उन्हें मरने न जाने देती थीं। हुसैन[अ०] ने उन्हें समझाना आरम्भ किया और कहा कि सन्तोष करो। जब साँच पर आँच आती है तो बड़ी से बड़ी भेंट चढ़ानी पड़ती है। यहाँ तक कि तीन दिन का भूखा प्यासा हुसैन[अ०] जिनके सब कुटुम्ब परिवार आँखों के सामने शहीद हो चुके थे, बीबियों से रुख़सत होकर रणक्षेत्र में आए। संसार में बहुत से बहादुर हुए हैं मगर हुसैन[अ०] का जीवन अपने रंग में बेमिसाल है। जिसके दिल पर उसके प्यारे और मित्रों के मर जाने के बहत्तर दाग़ थे, जिसके शरीर की रगें भूख, प्यास से खिंच रही थीं, जिसकी आँखों की रौशनी नष्ट हो चुकी, जिसके होश व हवास का इस परेशानी में भी क़ायम रहना आश्चर्य से ख़ाली नहीं, उससे युद्ध ठानी और उन्होंने आश्चर्यजनक बहादुरी दिखाई। सैकड़ों की संख्या में मार डाला। रक्त की नदियाँ बहा दीं। लाशों के ढेर लगा दिये। मगर कब तक एक अकेला आदमी इतनी बड़ी सेना का सामना कर सकता था। अन्त को घायल शेर घोड़े से पृथ्वी पर गिरा दिया गया। पापी शत्रुओं ने चारों ओर से घेर मार डाला, आह!

शहादत के पश्चात

हुसैन[अ०] की शहादत के बाद लाचार विधवायें और तमाम बच्चे अपने-अपने वारिसों को ख़ेमे में रो-पीट रहे थे। हत्यारों ने उन ख़ेमों में आग लगा दी। स्त्रियाँ घबरा-घबरा कर जान बचाने के लिए ख़ेमे से निकल पड़ीं। बैरियों ने उन्हें क़ैद करके रस्सी में बाँधा और ऊँटों पर बिठाकर कर्बला से कूफ़ा और कूफ़ा से मुल्क शाम 'यज़ीद' के सिंहासन तक ले गए। यज़ीद के हुक्म से यह लोग बहुत दिनों तक कड़ी क़ैद में रखे गए। इनको न तो ठण्डा जल ही मिलता था, न तो पेट भर भेजन ही मिलता था। दिन की धूप और रात की ओस ने सभों की सूरतें बदल दी थीं। लेकिन बहादुर और लज्जाशील, वह स्त्रियाँ थीं जिन्होंने तमाम कठिनाइयाँ झेली, मगर सत्यता के पथ से एक तिल पग नहीं हटाया।

हुसैन[अ०] की दी हुई शिक्षा और संसार का कर्तव्य

मित्रों! हुसैन का घर से बेघर होना अपने छोटे-छोटे बच्चों और स्त्रियों को संग लेकर बिना दाना पानी मरुस्थल की ख़ाक छानना कर्बला में 3 दिन की भूख और प्यास में उनका और उनके छोटे-छोटे बच्चों की परीक्षा होनी। प्रिय मित्रों तथा प्रिय बन्धुओं! प्यारे बेटों का नेत्रों के सम्मुख शहीद होना, घर बार का लुटना,

(बक़िया....... पेज 26 पर)

मालूम हो गया कि फ़लाँ जगह पर घिरा हुआ है तो खाना पानी भी बन्द कर देते हैं ताकि या तो वह मानने वाला हो जाए या तड़प-तड़प कर मर जाए। मगर वाह रे हुसैन[अ०] की सियासत, दुश्मन को भी पानी पिलाया और दुश्मन के घोड़ों को भी पानी से सैराब किया। ये थी हुसैन[अ०] की सियासत मगर एक यज़ीदी सियासत को भी देख लीजिए। सातवीं से इमाम पर इमाम के घर वालों पर और साथियों पर पानी बन्द है। बड़ी फौज ने दरिया पर घेरा डाल रखा है। सवाल ये है कि बैअत करो। या लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ उधर 30 हज़ार और इधर गिने गिनाए सिर्फ़ 72 जिनमें एक छः महीने का भी बच्चा है।

आख़िर आशूर की रात आई। इमाम[अ०] ने एक रात की छूट अल्लाह की इबादत के लिए मांगी। सभी जान देने वालों, अज़ीज़ों और दोस्तों को इकटठा किया। और आशूर की मुसीबतों से उन्हें फिर ख़बरादार किया। और ख़्वाहिश की कि जो जाना चाहें वह चला जाय बल्कि बैअत भी उठा ली ताकि जाने वालों में हिचक न हो। जब कोई न गया तो शमा बुझा दी गयी और कहा कि इस रात के अंधेरे में जो जाना चाहे चला जाए। मगर कोई न गया और सब ने कहा कि एक बार क्या अगर सत्तर बार भी क़त्ल किये जाएं। और ज़िन्दा हों तो भी यह जान इन्ही क़दमों पर निछावर करेंगे। ये थी हुसैन[अ०] की सियासत जो दिलों पर हुकूमत कर रही थी कब दुनिया में कोई ऐसी मिसाल मिलती है। मैं सच कहता हूँ कि अगर यज़ीद अपनी फौज़ से कहता कि तुम सब को कल मर जाना है और यक़ीनी मर जाना है और जिसका जी चाहे वह ख़ुशी से चला जाए मुझे बहाना नहीं है तो यक़ीनन चिराग़ बुझाने की ज़रूरत न पड़ती। और पूरी फ़ौज जान बचाकर भाग जाती।

हुसैन[अ०] का मक़सद इस्लाम को बाक़ी रखना था, यज़ीद की बैअत गवारा न की। इज़्ज़त की मौत को ज़िल्लत की ज़िन्दगी पर तरजीह दी। इसी उसूल पर क़ायम रहे और इसी उसूल पर क़ायम रहने की दावत दी।

इस शहादत ने दुनिया पर ये खोल दिया कि हक़ के रास्ते पर कौन है और बातिल के रास्ते पर कौन। और आज दुनिया की हर क़ौम हुसैन[अ०] को सच्चे रास्ते का शहीद मानती है। और उनके इस क़ौल ''ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर है'' पर अमल करने को अपना ईमान और असल इन्सानियत समझती है।

✦✦✦

(बक़िया....... हुसैन[अ०] कौन थे?)

दुखी स्त्रियों और लावारिस बच्चों का क़ैद होना एक दुख भरी कहानी है, जिसे सुनकर रो देना और मुसीबत की दास्तान पर चार आँसू बहा लेना मनुष्यत्व का कर्तव्य है। जिस आँख से किसी के दुख पर थोड़े आँसू न निकलें, जो दिल किसी के दुख दर्द पर न पसीजे, वह मनुष्य कब हो सकता है। हर मनुष्य इन घटनाओं को सुनकर अवश्य दुखी होगा। हुसैन[अ०] और साथियों के साथ प्रेम और उनके बैरियों से घृणा करेगा। मगर भाइयों यह भी विचार करो कि 'हुसैन[अ०]' ने अपना और अपने मित्रों, अज़ीज़ों और गोद के पाले बच्चों का गला किस बात के लिए कटा दिया।

मित्रों! हुसैन[अ०] ने कर्बला के रणक्षेत्र में बहुत सी शिक्षाएं दी हैं। उन्होंने बतलाया कि सम्मान पूर्वक मृत्यु अपमानजनक जीवन से कहीं बढ़कर है। उन्होंने सिखाया कि सत्यता, ईमानदारी और मनुष्यत्व के लिए प्राण अर्पण कर देना ही जीवन है। यह बताया कि कठिनाइयों और दुखों में दृढ़ रहना और किसी से न घबराना बहादुरी का जौहर है। अन्यायी अत्याचारी का जड़ से खोदकर फेंक देना किन अवसरों पर मनुष्य का कर्तव्य है। उन्होंने सिखाया कि किस प्रकार पाप, बुराई और अन्याय की शक्तियों का नाश किया जाता है। धार्मिक सुशीलता और ईश्वरभक्ति में सर कटा देना महात्माओं का कर्तव्य है।

संसार के सम्मुख किस प्रकार आत्मा का झण्डा ऊँचा किया जाता है। हुसैन[अ०] ने यह भी शिक्षा दी कि जब मनुष्यत्व और सदाचार पर कठिन समय आ पड़े, जब सत्यता को झूठ दबाना चाहे तो बैरियों की अधिकता और शक्ति और अपनी कमी व कमज़ोरी पर ध्यान न देना चाहिए। भाइयों! ये हुसैन की स्वर्णअंकित शिक्षाएं हैं। जो संसार के हर मनुष्य के लिए पालन करना आवश्यक है। हुसैन[अ०] केवल मुसलमानों ही के नहीं किन्तु हमारे जगत गुरु हैं। उनकी कथा का पाठ करना हर धर्मी का कर्तव्य होना चाहिए। प्यारे मित्रों यदि इन सुन्दर शिक्षाओं का पालन करना चाहते हो, यदि ईश्वर भक्ति की शिक्षा लेना हो, तो आओ और सब मिल कर संगठन के प्लेटफार्म पर इकटठे होकर जगत स्वामी मुहम्मद[स०] के नाती हुसैन[अ०] के शरण में आओ और ईश्वर भक्ति मेल-जोल, प्रेम सदाचार की शिक्षा ग्रहण करो। ✦✦✦